International Research Vision (Int. Res. Vn.)
ISSN: 2454-3721
Volume 2 Issue 2: 12-13, 2016

भारत में महिला शिक्षा और सुरक्षा

साधना कुमारी
गृह विज्ञान विभाग, नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालय, दरभंगा–846004, बिहार

सारांश

आज के भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के दौर में जहाँ महिलाओं की शिक्षा का महत्व बढ़ गया है वहीं उनकी सुरक्षा समाज और राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती भी बन गई है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक या सांस्कृतिक मोर्चे पर उनको कम आंकना, समाज और देश को उसकी आधी ताकत से वंचित रखना है। महिला शिक्षा के प्रतिशत को बढ़ाकर उनमें सुरक्षा की भावना को जागृत करना उनके सशक्तिकरण की दिशा में एक नया आयाम स्थापित करता है। प्रस्तुत आलेख का अभिप्राय महिलाओं में शिक्षा और सुरक्षा पर एक अल्प शोध का पर्याय है।

शीर्षक विश्लेशण

यह सर्वविदित है कि भारतीय संविधान ने महिलाओं को पुरूषों के बराबर, अधिकार दिये है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में कहा गया है, कि कानून के सामने स्त्री और पुरूष दोनों बराबर हैं। अनुच्छेद 15 के अंतर्गत महिलाओं को भेदभाव के विरूद्ध न्याय का अधिकार प्राप्त है। संविधान द्वारा दिये गए अधिकारों के अलावा भी समय – समय पर महिलाओं की अस्मिता और मान–सम्मान की रक्षा के लिए कानून बनाये गये हैं, मगर क्या महिलाएँ अपने प्रति हो रहे अन्याय के खिलाफ दस्तक दे पाती है, यह आज भी एक प्रश्न बनकर रह गया है।

साक्षरता और जागरूकता के अभाव में महिलाएँ अपने खिलाफ होने वाले अन्याय के विरूद्ध आवाज ही नहीं उठा पाती, शायद यह भी सच है। भारत में साक्षर महिलाओं का प्रतिशत 54 के आस–पास है, और गांवो में तो यह काफी कम है। वही जो साक्षर है वो जागरूक भी हो, यह भी कोई जरूरी नहीं है। वहीं संगठित क्षेत्रों में महिलाओं का आँकड़ा भी संतोषजनक नहीं है (तालिका–1)

तालिका–1: संगठित क्षेत्रों में महिलाएँ (स्त्रोत DGET श्रम मंत्रालय, भारत सरकार)

	सार्वजनिक क्षेत्र		निजी क्षेत्र		कुल	
वर्ष	पुरूष	महिलाएँ	पुरूष	महिलाएँ	पुरूष	महिलाएँ
1971	98.7(92.0)	8.6(8.6)	56.8(84.0)	10.8(16.0)	155.6(89.0)	19.3(11.0)
1981	139.8(90.3)	14.9(9.7)	61.0(82.5)	12.9(17.5)	200.5(87.8)	27.93(14.1)
1991	167.1(87.7)	23.4(12.3)	62.4(81.3)	14.3(18.8)	229.5(85.9)	38.81(14.1)
1993	168.4	24.7	63.0	15.5	231.4	40.27

हालाँकि आज के दौर में सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं व केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा महिलाओं की शिक्षा के प्रति रूझान के लिए विभिन्न तरह की योजनाएँ बन रही है और जिनका क्रियान्वयन भी किया जा रहा है। परिर्वत्तन की झाँकियाँ अब हमें भाहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिल रही है। पहले की तरह लड़कियों व महिलाओं के प्रति सामाजिक व परिवारिक संकीर्णताएँ कम हुई हैं, लेकिन आँकड़े बताते है कि अभी और जागरूकता की आव यकता है। वस्तुतः ऐसा सर्वेक्षण में पाया जा रहा है कि महिलाओं में शिक्षा की जागरूकता ही उनकी सुरक्षा के प्रति सशक्त बनाने में मदद करता है। फिर भी कुछ दुराग्रह और विसंगतियाँ भारतीय समाज में नारी और उनकी सुरक्षा को बाधा पहुँचाने का काम करते है। हमारे देश में 60 प्रतिशत जनसंख्या गांवो में जीवन यापन करती है जहाँ स्त्रियों को पुरूष प्रधान समाज का सामना करना पड़ता है। समाज में खुद को साबित करने के लिए बलों का प्रयोग, नारियों के उत्थान में पतन करता नजर आता है। किसी नारी को आगे बढ़ते हुए नहीं देखना, उनकी वेदना और संवेदना को नहीं समझना आदि प्रभाव आज भी गांवों में विद्यमान है। खाप पंचायत जैसे कई कुंठित भारतीय परपराएँ आज की विद्यमान हैं। आँकड़े बताते हैं कि भारतीय समाज में नारी उत्थान और सुरक्षा का दायित्व नारी पुलिस बल ओर सरकार से ज्यादा कई

जगहों पर पुरूषों का ही है। भारत में ऐसी संस्थाएँ भी बहुत है, जो इस उद्देश्य हेतु कार्यरत हैं परन्तु इतने बड़े नारी समुदाय का विकास एवं सुरक्षा कोई सरकार या संस्था अकेले नहीं कर सकती बल्कि हमारा और आपका सहयोग भी वांछनीय है।

रोज – रोज न्यूज चैनल, अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ज्ञात होता है कि हम अभी तक उबरे नहीं हैं। रोज समाचार का भीर्श वही हत्या,दहेज बलात्कार, लूट, छेड़छाड़ ..... आखिर कब तक हम यह देखते सुनते और पढ़ते रहेंगे? कब तक हम खुद पर भार्म करते रहेंगे? कब तक निर्भया जैसे कांड होते रहेंगे?

वक्त आ गया है, खुद को जगाने का और सबसे सचेत रहने का फिर वैसे ही सरकार घुटने टेकेगी जैसे आरूपि जेसिकालाल के केस में हुआ। अतः महिलाओं की सुरक्षा के लिए शिक्षा तो अनिवार्य है ही, पुरूशों को भी समझना होगा कि महिलाओं की सुरक्षा ही नारी का सम्मान है। अगर समय रहते हम अवसरों का समग्र उपयोग और महिलाओं की शिक्षा व सुरक्षा पर ठोस नीतियों के कार्यान्वयन करने का प्रण लेंगे तो हमारी सभ्यता व संस्कृति कायम रहेगी वरना हमें सभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का कोई अधिकार नहीं होगा।

संदर्भ सूची

1. Das, Geurcharan, 2000. Middle class values and changing India Enterpreneur' in middle class values in India and Western Europe (*ed.*) Social Science Press. New Delhi.
2. Dube,S. C. 1955. Indian Village. Routledge and Kegan Paul, London
3. Dube, S. C. 1977. Indian Sociology at the turning point. *Soc. Bull*. 26(1)
4. Basu, Alaka 1992.Culture, Status and demographic behavior of women in India. Clarendon press: Oxford
5. Sunder, N 1999. The Indian Census, Identity and Inequality, in institutions and Inequality : Essays in honour of Andre Beteille, (*eds.*), R.Guha and J. Parry, Oxford University Press: Delhi
6. Sharma, U 1986. Women's Work, Class and the Urban Household: A Study of Shimla, North India, Tavistock : London
7. Rao, Anupama 2005. Sexuality and the Family Form, Economic and Political Weekly XL (8):715-718
8. IGNOU, 2000. Foundation Course in Women's Empowerment and Development, FEW-01, Block-1, *p.*3-20